1

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (तुलुव)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : शक १४३४ - अंगिरा, फाल्गुण शुद्ध ५, तत्समान १५१३ ए.डि फरवरी १०, गुरुवार।

भाषा और लिपि: तेलुगु ।

विषय : कृष्णदेवराय की महारानी चिन्नाजी-अम्मा ने भगवान तिरुवेंगळनाथ को समर्पित भेंटों के रखने के लिए स्वर्ण-थाली की भेंट की।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -३; नं.४१.

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (तुलुवु)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : शक १४३४ - अंगिरा, फाल्गुण शुद्ध ५, तत्समान १५१३ ए.डि.फरवरी, १० गुरुवार।

भाषा और लिपि : तेलुगु ।

विषय : कृष्णदेवराय की महारानी तिरुमल देवी ने भगवान तिरुवेंगळनाथ को समर्पित भेंटों के रखने के लिए स्वर्ण-थाली की भेंट की। थाली के वजन को सूचित किया गया है।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -३; नं.५१.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (जगती की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर ।

राजा :

वर्ष : १५वीं शती ए.डि.।

भाषा और लिपि: तमिल।

विषय : भगवान को समर्पित किये जानेवाले कुछ नैवेद्य पदार्थों तथा मीठे पदार्थ (अप्पम्) के बारे में भी विवरण मिलता है। तथा नैवेद्यानन्तर इन मीठे पदार्थों को कोशागार में देना होगा।

आधार : ए.आर.आर.पि. २००८-०९.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३६८, तत्समान १४४६ ए.डि.।

भाषा और लिपि : तमिल।

विषय : महाराजा एर्रकम्पय्यदेव के पुत्र महाराजा पेरियमल्लय्य देव को तिरुमल मंदिर के धर्माधिकारी ने वचन दिया। इसके अनुसार भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को विविध पकवानों के निरंतर भोग चढाने के लिए कोशागार में जमा की गयी १,००० पणम् की धनराशि पर मिलनेवाले सूद से व्यवस्था की गयी। मंदिर में सेवाओं के मनाने के अवसर पर ४ नालि प्रसाद का वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -१; नं.२१०.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पद्म-पट्टी पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का काल।

वर्ष : शक १४५४, नंदन, तत्समान १५३२ ए.डि.।

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : नेदुनुगुन्नम् के निवासी एवं द्वारपतिवेलर के पुत्र पिल्लैपोरुत्तार को तिरुमल के धर्माधिकारी ने वचन दिया। दाता पिलैपोरुत्तर ने अपने जन्म नक्षत्र उत्तरा के दिन, हर महीने भगवान मलैकिनियानन्न पेरुमाल को विविध पकवानों के भोग चढाने के लिए ५,००० नार्पणम् की जमा कर दी। धर्माधिकारी ने दान की रकम को स्वीकार किया तथा इस पर मिलनेवाले सूद से विविध पकवानों को बनवाने का वादा किया। पकवानों को बनाने के लिए आवश्यक विविध पदार्थों को सूचित किया गया है। दाताओं या भक्तों में प्रसाद (कैंकर्य) का वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -४; नं.१५.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८९, सर्वजित्, तत्समान १४६७ ए.डि.।

भाषा और लिपि : तमिल।

विषय : तिम्मय्यदेव महाराज को तिरुमल के धर्माधिकारी ने वचन दिया। इसके अनुसार धनराशि को खर्च करके नहर को खोदकर, भूमि (पानी के प्रवाह से सिंचित) से मिलनेवाली संपत्ति का अपने नाम पर भगवान को मधुर पेय समर्पित करने के लिए, उपयोग किया जाय। इसके लिए आवश्यक पदार्थों का विवरण भी दिया गया है।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -२; नं.२७.

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित शिलालेख)।

वंश : विजयनगर (तुलुव)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : शक १४३४ - अंगिरा, फाल्गुन शुद्ध ५, तत्समान १५१३ ए.डि. फरवरी, १०, गुरुवार।

भाषा और लिपि : तेलुगु ।

विषय : राजा ने तिरुवेंगळनाथ मंदिर का संदर्शन कर, रत्नखचित आभरणों की भेंट की। इन रत्नों व मोतियों की संख्या व वजन को सूचित किया गया है।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -३; नं.३२.

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (तुलुव)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : शक १४३४ - अंगिरा, फाल्गुन शुद्ध ५, तत्समान १५१३ ए.डि. फरवरी, १०, गुरुवार।

भाषा और लिपि: कन्नड ।

विषय : कृष्णदेवराय की रानी चिन्नाजी अम्मा ने तिरुमल का संदर्शन किया तथा भगवान तिरुवेंगलनाथ को समर्पित भेंटें के रखने के लिए स्वर्ण थाली की भेंट की। थाली का वजन सूचित किया गया है।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -३; नं.४५.

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (तुलुव)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : शक १४३४ - अंगिरा फाल्गुन शुद्ध ५, तत्समान १५१३ ए.डि. फरवरी, १०, गुरुवार।

भाषा और लिपि : कन्नड ।

विषय : कृष्णदेवराय की रानी तिरुमल पधारी तथा उन्होंने भगवान तिरुवेंगलनाथ को समर्पित भेंटों के रखने के लिए स्वर्ण थाली की भेंट की। थाली का वजन सूचित किया गया है।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -३; नं.५२.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर ।

राजा : --

वर्ष : शक १३६८, तत्समान १४४६ ए.डि.।

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल मंदिर के बगीचा परिगय्यारचेल्वि के पर्यवेक्षक मंदिर के अधिकारी एम्बेरुमनार जीयर को तिरुमल के धर्माधिकारी ने वादा किया। इसके अनुसार १,००० पणम् मंदिर के कोशागार में जमा कर दी गयी और उस पर मिलनेवाले सूद से गोविंदराज स्वामी को वैकासी व आनि महीनों में सात दिन के लिए विविध पूजा व नैवेद्य के लिए संपन्न करावें और कहा गया है कि भगवान को समर्पित नैवेद्य का एकांगी श्रीवैष्णवों में वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -१; नं.२२१.

वीर नरसिंहदेव कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : यादवराय ।

राजा : वीर नरसिंहदेव यादवराय।

वर्ष : ४०वां राज्याधिकार वर्ष।

भाषा और लिपि : तमिल।

विषय : पहले प्राकार की उत्तरी कोने में मंदिर के पुनर्निमाण को प्रारंभित करनेवाले तिरुप्पलनि दासर के पूर्व सभी दाताओं द्वारा समर्पित दान की रकम को शिला पर पुनरंकित करने के लिए मंदिर के धर्माधिकारी को राजा (नायनार) ने आदेश दिया। इसके अनुसार चोलशासक राजराजा-I (1001 ए.डि.) के शिलालेख में सूचित किया गया है कि चेर राजा की पुत्री एवं पोम्मालिगुविल तनजिनदेवर की राणी द्वारा दिये गये आभरणों के दान के बारे में पुनः अंकित लिखा गया है।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -१; नं.८८.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर ।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : शक १४५८, दुर्मुखी, तत्समान १५३६ ए.डि.।

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : लेपाक्षी के नंदिलक्किचेट्टि पुटवर के पुत्र पेरुंकोण्डै वीरप्पन् को मंदिर के धर्माधिकारी ने वचन दिया। इसके अनुसार इन्होंने अच्युतराय के क्षे की कामना करते हुए भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को ८ तिरुपोक्कम् को समर्पित करने के लिए २०० पणम् की भेंट की तथा ग्राम के रेखी (कर) को चुकाने के लिए १२० पणम् भी दिया । उपरोक्त पकवान की तैयारी के लिए आवश्यक पदार्थों की सूची दी गयी तथा विविध लोगों में प्रसाद के वितरण करने की पद्धति भी कही गयी।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -४; नं.७७.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : १५वीं शती ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल।

विषय : भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को पेरुंकोण्डै राजमहल के अधिकारी वीरप्पन् ने ५००० पणम् से १० मरु कीमतवाले स्वर्णिम वाटिल (प्याला) की भेंट की।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -४; नं.७७.

राजेन्द्रचोल-१ कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : चोल

राजा : राजेन्द्रचोल - १।

वर्ष : ७ वां राज्याधिकार वर्ष, तत्समान १०१९ ए.डि।

भाषा और लिपि : तमिल।

विषय : तिरुवेंकट-देवर के मंदिर से संबंधित कुछ दान निधियों तथा सेवाओं के अमल करने के बारे में राजा के अधिकारी कोर्रमंगलम् उडैयन् ने जांच-पडताल की। पता चला कि शिला पर लिखित विवरण के अनुरूप तिरुमुडैयन सभासदों आचरण में असफल रहे। मंदिर के अर्चक तथा अधिकारियों से पूछताछ की गयी। तिरुमुडैयन के सभासदों के उपेक्षित व्यवहार के प्रति अधिकारी संतृप्त हुए और आदेश दिया कि इनसे मूलधन की राशि को वसूल किया जाय तथा उसको मंदिर के कोशागार में जमा कर रखें। मंदिर के अधिकारियों को दीपों के प्रज्वलन का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -१; नं.१९.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दिशा में कुमुद-पट्टी पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : शक १४५३, (१५३१ ए.डि.)

भाषा और लिपि : तमिल।

विषय : अप्परासर् के पुत्र तामप्पन् को मंदिर के धर्माधिकारी ने वचन दिया । इसके अनुसार उन्होंने भगवान तिरुवेंकट मुडैयन को दो पोनगम् (मधुर पेय) को समर्पित करने के लिए मंदिर के कोशागार में ३००० पणम् की जमा कर दी। इस धनराशि से सिरपदि ग्राम में माधवन् कलवाई नामक भूमि खरीदी गयी। इससे मिलनेवाली आय से आवश्यक पदार्थों जैसे चावल, मूंगा आदि को खरीदने की व्यवस्था की गयी । दाता भी प्रसाद में से अपने भाग को स्वीकार कर सकते हैं।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -४; नं.१३.

पार्थिवेन्द्रवर्मन् कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : पल्लव ।

राजा : कोप्पाट्र महेन्द्र पानमार।

वर्ष : १४वाँ राज्याधिकार वर्ष।

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : श्री वेंगडम में विराजमान भगवान को पल्लवप्पेरु कोदैयार की पुत्री रानी सामवाई यानी श्री कादवन् पेरुंदेवियार ने अनेक कीमती रत्न व मोती खचित आभरणों की भेंट की। आपने ३,००० खुल्ली भूमि भी खरीदी और उसे कर मुक्त कराके भगवान मणवाल पेरुमाल को भोग चढाने के लिए दान में दे दी। और भी कहा गया है कि उक्त भगवान को अयन् संक्रांति एवं विषु संक्रांति के पर्वदिनों में विशेष भोग चढाने या पूजा करने के लिए तथा अखंड दीप के प्रज्वलित रखने के लिए भी व्यवस्था की गयी। सात्तन्दायी नामक व्यक्ति ने इस पर हस्ताक्षर किया।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : ८.

मल्लय्यदेव कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर ।

राजा : मल्लय्यदेव।

वर्ष : शक १३७२, तत्समान १४५० ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल स्थित पंगय्यचेल्वि उद्यानवन के प्रबंधक एम्पेरुमन्नन् जीयर को तिरुमल के धर्माधिकारी ने वचन दिया। इनके द्वारा आरंभित पोक्कराजन् संधि के संदर्भ में भगवान तिरुवेंकटमुडैयनार को भोग चढाने के लिए २००० पणम् की मंदिर के कोशागार में जमा कर दी। दाता शाश्वत तौर पर प्रसाद में चौथा भाग ले सकता है तथा पंगय्यचेल्वि उद्यानवन के माली इसमें से कुछ भाग ले सकते हैं।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : २१८.

पार्थिवेन्द्र वर्मन् कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : १४वां

राजा : पार्थिवेन्द्रवर्मन्।

वर्ष : १४वां राज्याधिकार वर्ष ।

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : मार्गलि महीने में मणवाल पेरुमाल (रजतमूर्ति) को तथा तिरुवेंगडम् पर विराजमान भगवान को विशेष नैवेद्य व पूजायें करने की व्यवस्था की गयी। वेंकट-कोट्टम् स्थित तिरुक्कुडवुरनाडु में तिरुचगुनूर के सभैयार से तथा भगवान तिरुवेंगडम् की संबंधित भूमि को अनेक भागों में खरीदकर ४१७६ ३/४ कुली की कादवन् पेरुंदेवी यानी सामवाई ने भेंट की। तिरुवेंगडम मंदिर के प्रबंधकों को इसको अमल में लाने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : ९.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : शक १४६०, विलंबि, तत्समान् १५३८ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : लेपाक्षी के नंपिलक्कि चेट्टियार के पुत्र पेरुनकोण्डै वीरप्पनन् ने भगवान तिरुवेंकट मुडैयन् को मीठे पकवानों के नैवेद्य को समर्पित करने के लिए तिरुमल मंदिर के कोशागार में २००० पणम् की धनराशि जमा कर दी। मंदिर के धर्मचारी ने इस दान को स्वीकार किया। नैवेद्य के चौथा भाग दाता को दिया जाया।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -४; संख्या : ११९.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : विकारी (१५ वीं शती ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : भगवान तिररुवेंकट मुडैयन के नाम पर पेरुनुकोण्डै वीरप्पन् ने अनेक रजत पात्रों की भेंट कीं।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -४; संख्या : १४१.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८९, सर्वजित्, तत्समान १४६७ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : रामानुज कूटम, यात्री केंद्र के प्रबंधक एवं कंदालै रामानुज अय्यंगार के शिष्य अलगिय मनवाल जीयर को तिरुमल के धर्माधिकारी ने वचन दिया। श्री अलगिय मनवाल जीयर ने धन को खर्च करके कोर्रमंगलम् व कुर्रे के पास दो नहरों की खुदवाई की तथा इस खेतीबाडी द्वारा मिलनेवाली संपत्ति के खर्च करके नरसिंहराजन्-उडैयार को संधि सेवा मनायी जाय। साथ ही तृकानामादै नामक पदार्थ का भोग चढाय जाय तथा धर्मशाला में ठहरनेवाले यात्रियों में इसका वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : २६.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८६, तारण, तत्समान १४६४ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : सन्निधि वीथि में स्थित रामानुज कूटम् नामक धर्मशाला के प्रबंधक कंदालै रामानुज अय्यंगार को तिरुमल के धर्माधिकारी ने वचन दिया। इसके अनुसार भगवान अलगप्पिरनार को विविध पूजा-सेवायें भक्तिश्रद्धापूर्वक मनाया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : २२.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : सालुव नरसिंह।

वर्ष : शक १३९१ (१४६९ ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने तिरुमल तिरुपति में स्थित रामानुजकूटम् धर्मशाला के प्रबंधक कंदालै रामानुज अय्यंगार को वचन दिया। इन्होंने अपनी धनराशि को खर्च करके पनगम् के पास भूमि को लिया तथा नहर को खोदकर, खेतीबाडी की। इस पर मिलनेवाली आय से प्रति रात में भगवान को भोग चढाने की व्यवस्था की। भगवान के नैवेद्य के लिए आवश्यक पदार्थ जैसे घी, दाल, दूध, तरकारियाँ, काली मिर्च तथा अन्य आदि पदार्थ को लिया जाय। फिर इन्होंने इससे पहले ७०० पणम् की जमा कर दी, जिससे अविवाल के पास कलाई-पट्टै-पर्रु में भूमि खरीदी तथा कर्पूर या अन्य पदार्थों की खरीदी के लिए उपयोग किया जाय। प्रसाद को नैवेद्यानन्तर दाता को देना होगा तथा शेष भाग को पूजा के अवसर पर भक्तों में वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ४०.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३६८ (१४१६ ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : भगवान तिरुवेंकट मुडैयन और श्री गोविंदराजप्पेरुमाल को चित्रै महीने में संपन्न होनेवाले नौ दिवसीय उत्सव में ध्वजारोहण तथा वैकासी व आनि महीनों के पर्व दिनों के अवसर पर सेवा-उत्सव व नैवेद्य को समर्पित करने केलिए तिरुमल मंदिर के धर्माधिकारी ने १००० पणम् की धनराशि जमा करनेवाले अधिकारी एम्बेरुमानर जीयर को वचन दिया। नैवेद्य पदार्थ जैसे तिरुकानिमदै, अप्पम् (मधुर पदार्थ) एवं अन्य पकवानों की तैयारी के लिए आवश्यक पदार्थों का विवरण दिया गया है। और भी कहा गया है कि दाता को प्रसाद का चौथा भाग दिया जाय तथा शेष भाग में मंदिर के उद्यानवन तथा मठ के एकांगी श्रीवैष्णवों को चार नल्ली एवं मंदिर की न्यास-मंडली के सदस्यों को बारह नल्ली दिया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : २२.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३९३, खर, तत्समान १४७१ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने सिंगरकोविल वीथी में निवसित पुल्लगंडम् तिरुवेंकट दासर को वचन दिया। नरसिंहरायर-उडैयार के आदेशानुसार नरसिंह को प्रसाद दिया जाय तथा शेष भाग दाता को दिया जायगा।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ४८.

तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३६७ (१४४५ ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : धर्माधिकारी ने अनंत शयन को वचन दिया। इन्होंने तिरुवेंकटमुडैयन एवं श्री गोविंदराज स्वामी पेरुमाल को नौ दिवसीय उत्सवों के ध्वजारोहण के अवसर पर नैवेद्य तथा विविध पकवान जैसे सुखियम्, तिरुकन्नमदाई आदि को समर्पित करने के लिए ३०० पणम् की भेंट की। दान की रकम से नैवेद्य के लिए आवश्यक पदार्थों का संग्रहण किया जाय। भगवान को समर्पित नैवेद्य प्रसाद को दाता एवं अन्यों में वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : २१३.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव) ।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८०, बहुधान्य, तत्समान १४५८ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने मंदिर के उद्यानवन के पर्यवेक्षक एवं प्रधानाचार्य पेरियार पेरुमाल जीयर को वचन दिया। इन्होंने अपने नाम पर २००० पणम् की धनराशि जमा कर दी तथा इस पर मिलनेवाले सूद से दो पोनगम् पदार्थों का भोग चढाने के लिए कहा। दाता को इस प्रसाद के भाग को शाश्वत तौर पर दिया जायगा तथा एकांगी वैष्णवों में भी वितरण किया जायगा।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ७.

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (तुलुव)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : शक १४३५, श्रीमुख, वैशाख, कृष्ण १२, सोमवार, तत्समान् **१५१३ ए.डि. मई, २, सोमवार**।

भाषा और लिपि: कन्नड ।

विषय : राजा कृष्णदेवराय तिरुपति पधारे तथा इस अवसर पर भगवान तिरुवेंगनाथ को कीमती रत्न, मोती खचित विविध आभरणों की भेंट करने के बारे में व्यापक विवरण मिलता है।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -३; संख्या : ६२.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : शक १४५९, विलम्बि, तत्समान १५३७ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : मुरुगमंगलपर्रु के नेड्डुगुन्राम् के निवासी द्वारपतिवेलर के पुत्र तिरुमलैनाथ पिल्लै को धर्माधिकारी ने वचन दिया। इन्होंने अपने जन्म नक्षत्र तिरुवेन् नक्षत्र के अवसर पर भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को विविध उत्सव-सेवायें अर्थात् पवित्र स्नान एवं नैवेद्य आदि को मनाने के लिए ५७०० पणम् की धनराशि जमा कर दी। भगवान को स्नान कराने के लिए आवश्यक पदार्थों को विवरण दिया गया है और भी कहा गया है कि इस रकम को मंदिर से संबंधित तालाब व पुष्करिणी के मरम्मत के लिए खर्च किया गया तथा उक्त सेवाओं के खर्च के लिए इस पर मिलनेवाली आय का उपयोग किया जाय। प्रसाद वितरण के बारे में विवरण दिया गया है।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -४; संख्या : ९९.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३६७, तत्समान १४४५ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने पंकय्यचेल्लि-तिरुनंदवनम् के प्रबंधक तथा मंदिर के अधिकारी एम्पेरुमान जीयर को अंगीकार-पत्र दिया। आडि से चित्रै तक मनाये जानेवाले ध्वजारोहण से प्रारंभित साप्ताहिक उत्सवों में तिरुमल में पुष्पयाग के दिन भोग चढाने के लिए मंदिर के कोशागार में १००० पणम् की धनराशि जमा कर दी गयी। और कहा गया है कि इन उत्सवों तथा अनुबंध उत्सवों का निर्वहण दान की रकम पर मिलनेवाले सूद से किया जाय। भगवान तिरुवेंकटमुडैयन तथा गोविंदराज पेरुमाल को इस अवसर पर भोग चढाना होगा तथा प्रसाद का परिमाण तथा तैयारी के लिए आवश्यक पदार्थों का विवरण दिया गया है। फिर कहा गया है कि उद्यानवन माली वैष्णवों में प्रसाद का वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : २२०.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८५, विजय।

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने पुरुदकुंदै के पास निवसित एक ब्राह्मण सोमनाथ दीक्षितर को वचन दिया। आपने मंदिर की भाट्टवृत्ति निधियों से २१५ कुळी भूमि खरीदी तथा मंदिर के कोशागार में भेंट की तथा करकोदाई, कदमाई तथा अन्य करों के बदले में एक धार्मिक सेवा का प्रारंभ किया और भोग चढाने के लिए अंगीकार प्रकट किया। और कहा गया है कि भूमि के बकायी करों के बदले भगवान तिरुवेंगड मुडैयन को भोग चढाने का दाता ने अंगीकार प्रकट किया। प्रसाद में अपने हिस्से को लेकर, शेष भाग को सुबह की संधि सेवा में वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ५४.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : --

वर्ष : शक १३१४, तत्समान १३९२ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने तिरुमल स्थित अरिसनालयन के प्रबंधक तिरुवेंकट जीयर को वचन दिया। भगवान मलैकिनियानिन्र पेरुमाल तथा नाच्चियार के शोभा-यात्रा में विश्राम के लिए (पर्वदिनों में) तिरुमंडप में पधारने पर नैवेद्य तथा पेय को समर्पित करने के लिए कोशागार में ६०० पणम् पर जमा की गयी , मिलनेवाले सूद का उपयोग किया जाय। दाता को प्रसाद देना होगा, तदनंतर मठ के अधिकारी श्रीवैष्णवों को भी देना होगा।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : १९०.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३७९, ईश्वर, तत्समान १४५७ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : साबिरि पेरुमाल की पुत्री तथा नरसिंह मंदिर में नर्तकी वेंकटवल्ली ने अपने नाम पर भगवान तिरुवेंकट मुडैयन को भोग चढाने के लिए १००० पणम् की भेंट की। इसके अनुसार भगवान को तिरुप्पोनगम् (मधुर पेय) का भोग चढाया जाय तथा कहा गया है कि इसका वितरण संधि समय में भक्तों में किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ५.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८९, सर्वजित्, **तत्समान १४६७ ए.डि.**

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने सालुव गुणदयादेव को वचन दिया। इसके अनुसार आपने तंगनाडु स्थित अगारम्-मुरुक्कम् पट्टु की तिरुविदैयाट्टम् को मकर संक्रान्ति के दिन पर पेय पदार्थ चढाया जाय की तथा इस तालाब के निर्वहण के लिए २००० पणम् की भी जमा कर दी। और कहा गया है कि तालाब तथा ग्राम द्वारा मिलनेवाली आय को भोग चढाने के लिए खर्च करने के बारे में सूचित किया।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ३१.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार, कुमुदपट्टै पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : सालुव नरसिंह।

वर्ष : शक १३९६ (१४७४ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने पिनसेनरवल्लि नंदवनम् के उद्यानवन के माली पेरिय पेरुमाल दासर को वचन दिया। इन्होंने भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को सात दिन के लिए तथा गोविंदप्पेरुमाल को दो दिन के लिए (ध्वजारोहण के दिनों) तिरुपोन्नगम को देने का संकल्प लेकर मंदिर के कोशागार में १६६० पणम् जमा कर दी। इस दान की रकम को मंदिर की भूमि में स्थित तालाब, नहर के मरम्मत के लिए खर्च किया गया तथा इन भूमियों पर प्राप्त संपत्ति अर्थात् फसल आदि को खर्च करके नैवेद्य की तैयारी केलिए आवश्यक पदार्थ जैसे घी, धान्य, काली मिर्च, नमक आदि को लेना चाहिए। इन पदार्थों को मंदिर के कोशागार में दिया जाना चाहिए। नैवेद्यानंतर प्रसाद का दाता एवं रामानुज अय्यंगार के शिष्यों में वितरण किया जाय। उक्त उद्यानवन के प्रबन्धक एकांगी श्रीवैष्णवगल में को अन्य नैवेद्य पदार्थ सुखियम् का वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ६१.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३९८, दुर्मुखी, तत्समान १४७६ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने मलैकिनियान्नान नामक मंदिर उद्यानवन के पर्यवेक्षक श्रीवैष्णव गोपय्यन को वचन दिया। इन्होंने इनके नाम पर भगवान तिरुवेंगडमुडैयन की सेवा का प्रारंभ किया तथा उन्हें भोग चढाने की भी व्यवस्था की। इसके अनुसार मंदिर भूमि में स्थित तालाब की वृद्धि के लिए १००० पणम् जमा कर दी तथा इस पर मिलनेवाली आय से भगवान को भोग चढाने के लिए खर्च किया जाय। नैवेद्यानन्तर दाता को चौथा भाग दिया जाय, शेष भाग का वितरण भक्तों में किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ६६.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमीी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३९१, विरोधी, तत्समान १४६९ ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के अधिकारी ने लकचचानि अम्मन का पुत्र आदिराजा को वचन दिया । मंदिर के अधीकृत एक ग्राम कालीधीरामंगलम् में स्थित तालाब की वृद्धि के लिए खर्च करने १००० पणम् की भेंट की। इस भूमि द्वारा मिलनेवाली आय का प्रतिदिन मधुर पेय को भोग चढाने तथा इसकी तैयारी के लिए आवश्यक पदार्थों के संग्रहण के लिए उपयोग किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ४६.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की पश्चिमी दीवार कुमुदपट्टै पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : सालुव नरसिंह

वर्ष : शक १३८७ (१४६५ ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने राजा पर्वतराजा को वचन दिया। इन्होंने मंदिर से संबंधित 'पडी' ग्राम में नहर को खुदवायी। इस भूमि में उगनेवाली फसल से अपने नाम पर भगवान को चार तिरुप्पोणक्कम को मनाने की व्यवस्था की। लाल वर्ण पद्मों की उपज करनेवाले श्रीवैष्णवों में वितरण करने के लिए दाता को दो नाली प्रसाद दिया जाय। कहा गया है कि कन्दालै रामानुज अय्यंगार की सूचना पर यह व्यवस्था की गई।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : २३.

होबल कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की उत्तरी दीवार पर अंकित)।

वंश : यादवराय।

राजा : होबल।

वर्ष : ४० वां राज्याधिकार वर्ष।

भाषा और लिपि : संस्कृत, ग्रंथ।

विषय : महाराजा होबल ने लोगों के लिए संतोषप्रदायक एक उत्तम आभरण की भेंट की। शौरी (विष्णु) के हाथ पर यह आभरण धारण किया गया।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : ११६.

तंजाई कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहली प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : यादवराय।

राजा : तंजाई ।

वर्ष : ४० वां राज्याधिकार वर्ष।

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : विद्वान के रूप में सुविख्यात ओबलनाथन् ने वेंकट पर्वत पर विराजमान भगवान को पुष्पोद्यान की भेंट की, जिससे कि उद्यानवनों की शोभा में वृद्धि हुई।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : ११७.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३७६, तत्समान १४५४ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने तिरुमल स्थित पापनाशनम् के पास के उद्यानवन के प्रबन्धक श्री रामदासर को वचन दिया। इन्होंने (भगवान) तिरुवेंकटमुडैयन को प्रतिदिन मधुर पेय के नैवेद्य के लिए १००० पणम् जमा कर दी और इस पर मिलनेवाले सूद का उपयोग किया जाय।

प्रसाद में एक नाली भाग दाता को दिया जायगा तथा इसका उद्यानवन के माली श्रीवैष्णवों में वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : २२५.

नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : नरसिंह।

वर्ष : शक १३८४, चित्रभानु, तत्समान १४६२ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : नरसिंगराजा उडय्यर के क्षेम की कामना करते हुए भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को दो व्यक्तियों कोनेरी और उलगलान्दवेल्लन ने सत्ताकदीमरुदूर के पेरिय गोपालन चिन्नन्, करि, सिरु गोपालन तथा अन्यों को ज्योति प्रज्वलन की सेवा (तिरुविलक्कुकुदि) का कार्यभार सौंपा और कहा गया है कि इन्हें घी को देकर प्रधान अर्चक से रसीद लेना होगा।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : १२.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३१२, तत्समान -१३९० ए.डि.

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल में उद्यानवन के प्रबंधक तिरुवेंकट जीयर और तिरुमल के धर्माधिकारी के बीच अंगीकार हो गया। इसके अनुसार प्रबंधक द्वारा के कोशागार में १२०० पणम् की धनराशि जमा कर दी गयी एवं इस पर मिलनेवाले सूद को खर्च करके मार्गलि महीने में तिरुप्पावै के पठन के संदर्भ में श्री गोविंदराजप्पेरुमाल व नाच्चियार देवी को अन्नप्रसाद का समर्पण किया जाय। विविध लोगों में प्रसाद बांटने के लिए गणना की गयी है।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : १८७.

अच्युतराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : अच्युतराय का समय।

वर्ष : शक १४५५, नंदन, तत्समान १५३३ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : अगारम कदलाडि के निवासी काश्यप गोत्रीय नागरभट्टर के पुत्र रामचन्द्र दीक्षितर नामक अधिकारी (रायसम) ने अपने जन्म नक्षत्र रोहिणी के दिन पर भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को नैवेद्य समर्पित करने के लिए पांच हजार अननपणम् की जमा कर दी। कहा गया है कि इस अवसर पर अच्युतरायकोनेरी-कराई स्थित मंडप को भगवान की मूर्ति जब पधारते हैं, तभी नैवेद्य को समर्पित करना होगा। मंदिर के धर्माधिकारी ने दान की रकम को स्वीकार किया। तथा मंदिर से संबंधित ग्रामों के तालाब व नहरों की वृद्धि के लिए यह धन खर्च किया जाय। इस पर मिलनेवाली आय द्वारा आवश्यक पदार्थों का संग्रहण एवं भक्तों में प्रसाद का वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -४; संख्या : २४.

कृष्णदेवराय कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (तुलुव)।

राजा : कृष्णदेवराय।

वर्ष : अंगिरा, श्रावणकृष्ण ११, कृष्णदेवराय के शासन काल में शक तथा वार सो सूचित नहीं किया गया है। अंगिरा को शक १४३४ माना जा सकता है् और अन्य विवरण तत्समान १५१२ ए.डि. अगस्त ७, शनिवार होंगे।

भाषा और लिपि: कन्नड ।

विषय : भगवान तिरुवेंगलनाथ की सन्निधि में कृष्णदेवराय के पहरेदार नरसय्य और उनका भाई तिम्मय्य हमेशा साष्टांग प्रणाम किया करते थे। कहा गया है कि इनकी माता बसवम्मा भी इसी भगवान को प्रणाम किया करती थी।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -३; संख्या : २६.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३०१, तत्समान १३७९ ए.डि.।

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल स्थित अलप्पिरानर तिरुमंडप नामक बगीचे में भगवान मलैंकिनिय पेरुमाल तथा देवी की पर्वदिनों में आगमन के संदर्भ में पूजा-सेवा तथा भोग चढाने के लिए तिरुपति के श्री वैष्णव भक्त श्री अलगप्पिननार तिरुक्कलीकोन्नन्रि दासर ने मंदिर के कोशागार में ४५० पणम् की धनराशि जमा कर दी। श्री वराह नायनार को भोग चढाने तथा परिमल द्रव्यों से अभिषेक मनाने की व्यवस्था की गयी।

आधार : ति.ति.दे. शिलालेख, संपुट -१; संख्या : १८४.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर ।

राजा : सालुव नरसिंह।

वर्ष : (१५ वीं शती ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल मंदिर के धर्माधिकारी ने मलौकिनिन्नान तिरुनन्दवर्मन नामक मंदिर उद्यानवन के माली, एकांगी श्रीवैष्णव गोपय्यन् को वचन दिया। भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को अपने नाम पर भोग चढाने के लिए मंदिर के कोशागार में इन्होंने १००० पणम् की जमा कर दी। इस दान की रकम को मंदिर से संबंधित भूमियों में प्रवाहित तालाब व नहरों के मरम्मत के लिए खर्च किया जाय। इस तालाब के पानी से सिंचित भूमि से मिलनेवाली आय का नैवेद्य की तैयारी के लिए आवश्यक पदार्थो के संग्रहण के लिए उपयोग किया जाय। नैवेद्यानन्तर प्रसाद का वितरण दाता एवं अन्यों में किये जाने का विवरण दिया गया है।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ६६.

विजयनगर कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३६६ (१४४४ ए.डि.)

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : इस आदेश के अनुसार में सिद्धकुट्टि में भाग लेनेवाले वेदपंडितों को स्वयं मंदिर के में कोशागार से आधा भाग लिया जाय तथा प्रतिदिन दो वेदपंडितों द्वारा उदयपारायण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -१; संख्या : ११७.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : सालुव नरसिंह।

वर्ष : शक १३८९, तत्समान १४६७ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी तथा (राजा) नरसिंगय्य देवमहाराय के बीच अंगीकार हो गया। इन्होंने भगवान तिरुवेंकटमुडैयन को अपने नाम पर विविध पदार्थ जैसे तिरुकनमदै एवं सुखियम् (मीठे पकवान) के भोग चढाने के लिए वंचिपाक्कम, मल्लिमलै, सेरुलक्कम, भीमापुरम तथा बल्दिमनकन्दन नामक पाँच ग्रामों को इन ग्रामों में वसूल किये गये कर का खर्च किये जाने के शर्त पर दान किया । इन नैवेद्य पदार्थों की तैयारी केलिए आवश्यक पदार्थों की सूची दी गयी। नैवेद्यानन्तर विविध व्यक्तियों में वितरण करने के बारे में विवरण दिया गया है। और कहा गया कि नैवेद्य पदार्थों के तैयार करनेवाले ब्राह्मणों को हर महीने बारह पणम् दिया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ३४.

सालुवनरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : सालुव नरसिंह।

राजा : --

वर्ष : शक १३९० (१४६८) ए.डि.।

भाषा और लिपि: तमिल ।

विषय : तिरुमल मंदिर के धर्माधिकारी ने लिपिक सदाशिव नायनार गोविंदन् को वचन दिया। इन्होंने तिरुवेंकटमुडैयन को प्रतिनित्य एक तिरुपोन्कम् को मनाने के लिए कोशागार में १००० पणम् की जमा कर दी। इस पर मिलनेवाले सूद का धान्य, घी, दही, नमक, काली मिर्च और अन्य पदार्थों की खरीदी के लिए खर्च किया जाय। नैवेद्यानन्तर दाता को चौथा भाग रखकर, शेष भाग को तिरुनिन्नारूर उडैयन्नल्लार वेंकटवनन् को दिया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : १३७.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर।

राजा : --

वर्ष : शक १३८५, सुभानु, तत्समान १४६३ ए.डि.।

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : तिरुमल के धर्माधिकारी ने तिम्मरसर-उडय्यार को वचन दिया । इन्होंने अपनी धनराशि को खर्च करके अविलाल के पास स्थित मंदिर भूमि की सिंचाई के लिए नहर खुदवाई तथा फसल उगाये। इस पर मिलनेवाले संपत्ति का प्रातः कालीन सेवाओं के अवसर पर तथा नरसिंगराजा उडय्यर के शुभ की कामना करते हुए चार तिरुप्पोनकम के लिए उपयोग किया जाय। और कहा गया है कि तिरुमल स्थित पुष्पोद्यान के माली दासर को प्रतिदिन प्रसाद का कुछ भाग दिया जाय तथा शेष भाग का वितरण सुबह की पूजा के अवसर पर भक्तों में वितरण किया जाय।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : १८.

सालुव नरसिंह कालीन तिरुमल शिलालेख

प्रदेश : तिरुमल, चंद्रगिरि तालुक, चित्तूर जिला, आंध्रप्रदेश। (तिरुमल मंदिर के पहले प्राकार की दक्षिणी दीवार पर अंकित)।

वंश : विजयनगर (सालुव)।

राजा : सालुव नरसिंह ।

वर्ष : शक १३९०, तत्समान १४६८ ए.डि.

भाषा और लिपि : तमिल ।

विषय : अलगैयामनावतारजीयर के शिष्य कंददाइ रामानुज अय्यंगार को तिरुमल की न्यास-मंडली ने वचन दिया। तिरुवेंकट नलूर ग्राम के सामने स्थित मंदिर की निजी पुष्करिणी (करमबातरै के सामने) उन्होंने खोदा। कहा गया है कि इस खुदवाई में मिली संपत्ति से भगवान की सायंकालीन सेवा में भोग चढाने की व्यवस्था की गयी। इस नैवेद्य के लिए दही-भात, चित्रान्न, भुनाई सब्जी, सुपारी पत्ते आदि को रखना होगा। इनमें से दाता को एक बंटा चार (१/४) भाग देना होगा। और कहा गया है कि आडि से चित्रै (तमिल महीनों) में सात दिनों के लिए भोग चढाना होगा। दाता के भाग से सात्तादि श्रीवैष्णवों को छः अप्पम् देना होगा। चंदन लेपन से भगवान को स्नान कराने की व्यवस्था भी की गयी। दाता ने भगवान को दही-भात के नैवेद्य के लिए ४० गायों का दान भी किया।

आधार : ति.ति.दे.शिलालेख, संपुट -२; संख्या : ३८.